Truth knowable through experience)

(ख) विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषात्मक
(Analytic and Synthetic)

1. स्वरूप

कथनों अथवा प्रतिज्ञप्तियों के बीच प्रागनुभविक तथा अनुभवाश्रित का भेद करने के अलावा

---

1. जॉन हॉस्पर्स, वही, p. 181

एक और महत्त्वपूर्ण भेद विश्लेषणात्मक (Analytic) तथा संश्लेषात्मक (Synthetic) कथनों के बीच किया जाता है। ये दोनों ही प्रकार के भेद आधुनिक दर्शन में सर्वप्रथम शायद *कान्ट* ने किये थे (यद्यपि *लाइबनित्स* के विचारों में भी इनका संकेत मिलता है) और तभी से दर्शन तथा तर्कशास्त्र में इनका बड़ा महत्त्व है। विश्लेषात्मक-संश्लेषात्मक की जो परिभाषा *कान्ट* ने दी थी, बिलकुल वही परिभाषा उनकी आज भी नहीं दी जाती और एक अर्थ में कहा जा सकता है कि *कान्ट* के द्वारा दी गई इन कथनों की परिभाषा संकुचित है। *कान्ट* के समय तक तर्कशास्त्र में सिर्फ उद्देश्य-विधेय आकार की प्रतिज्ञप्तियों की ही मान्यता थी इसलिए उन्होंने अपनी परिभाषा इन्हीं प्रतिज्ञप्तियों को ध्यान में रखकर की है। उनके अनुसार विश्लेषात्मक कथन वैसे कथन है जिनके विधेय में उद्देश्य पद का मात्र विश्लेषण किया जाता है, यानी विधेय में उद्देश्य पद को ही या तो पूर्णरूपेण या आंशिक रूप से दुहराया जाता है या फिर उसकी परिभाषा या इसके एक अंश को व्यक्त किया जाता है। 'त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र है', 'सभी मनुष्य मनुष्य हैं', 'मनुष्य विवेकशील है', 'लाल लाल है', 'काली बिल्ली बिल्ली है', 'पिता पुरुष है', आदि विश्लेषणात्मक कथन हैं। दूसरी ओर 'कुछ मनुष्य ईमानदार हैं', 'यह गुलाब है', 'कुछ गुलाब लाल है', 'मेज गोल है', आदि संश्लेषात्मक कंचनों के उदाहरण हैं चूँकि ये कथन ऐसे हैं जिनके विधेय में सिर्फ उद्देश्य-पद का विश्लेषण नहीं है, बल्कि उसमें अनुभव के आधार पर उद्देश्य-पद को कोई गुण आरोपित किया जाता है। आज जो परिभाषा विश्लेषात्मक-संश्लेषात्मक कथनों की दी जाती है उसकी मूल आत्मा वहीं है जो *कान्ट* की परिभाषा में निहित है, पर उसका क्षेत्र विस्तृत है, यानी वह आधुनकि तर्कशास्त्र में उद्देश्य-विधेय आकार की प्रतिज्ञप्तियों के अलावा जिन अन्य प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को भी मान्यता दी जाती है उनपर भी लागू होती है।

यो तो अभी भी कई प्रकार की परिभाषाएँ विश्लेषात्मक-संश्लेषात्मक कथनों की दी जाती हैं, पर उनमें से दो प्रकार की परिभाषाएँ प्रायः मान्य रूप में स्वीकार्य हैं। ये दोनों परिभाषाएँ परिभाषा रूप में भिन्न अवश्य हैं, पर उनकी वस्तुवाचकता प्रायः एक ही है, यानी जिन प्रतिज्ञप्तियों का दोनों परिभाषाओं के आधार पर बोध होता है वे प्रायः एक ही हैं। ये दो परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :—

(1) विलेषात्मक कथन वैसे कथन हैं जिनके विरोधी आत्म-व्याघाती (self-contradictory) होते हैं और जो भी कथन विश्लेषात्मक नहीं होते, वे संश्लेषात्मक होते हैं।

(2) विश्लेषात्मक कथन वैसे कथन वैसे कथन हैं जिनकी सत्यता का निर्धारण मात्र उनमें व्यवहृत शब्दों के अर्थ-विश्लेषण से ही हो जाता है और संश्लेषात्मक कथन वैसे कथन हैं जिनकी सत्यता का निर्धारण व्यवहृत शब्दों के अर्थ-विश्लेषण द्वारा नहीं, बलिक वास्तविक अनुभव द्वारा होता है।

हम परिभाषाओं को एक-एक कर लें और उदाहरणों द्वारा उन्हें समझने की चेष्टा करें।

प्रथम परिभाषा के अनुसार विश्लेषात्मक कथन वैसे कथन हैं जिनके विरोधी आत्म-व्याघाती होते हैं। 'यदि कोई वस्तु लाल है, तो वह लाल है', 'कुँवारा अविवाहित होता है', 'त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा होता है', 'या तो वर्षा हो रही है या नहीं हो रही है' आदि कथन विश्लेषात्मक हैं, चूँकि इनमें से किसी का निषेध करने से एक आत्म-व्याघांत पैदा होता है। (हम यहाँ यह भी देख सकते हैं कि इनमें से सभी कथन उद्देश्य-विधेय आकार के ही नहीं हैं।) जैसे, यदि हम कहें 'त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा नहीं होता है' तो यह स्पष्ट ही एक आत्म-व्याघात है, चूँकि त्रिभुज का अर्थ ही होता है (यानी, उसकी परिभाषा ही यही है) कि

Scanned by TapScanner

वह तीन भुजाओं से घिरा होता है। 'त्रिभुज' की जगह 'तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र' का यदि हम प्रतिस्थापन कर दें (जो हम कर सकते है, चूँकि 'त्रिभुज' तथा 'तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र' का एक ही अर्थ है), तो उपर्युक्त निषेधात्मक कथन हो जायेगा 'तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र तीन भुआजों से घिरा नहीं होता', जो स्पष्टतः एक आत्म-व्याघात है। उसी तरह यदि हम कहें 'कुँवारा अविवाहित नहीं होता', 'यदि कोई वस्तु लाल है, तो वह लाल नहीं है', 'न तो वर्षा हो रही है, न नहीं हो रही है', तो ये सभी आत्म-व्याघात के उदाहरण हैं। परन्तु यदि हम कहें 'कुछ गुलाब लाल हैं', 'राम एक मनुष्य है', कौवे काले होते हैं', तो इनमें से किसी के निषेध से कोई आत्म-व्याघात पैदा नहीं होता, भले ही एक असत्य कथन-हमारे सामने चला जाये। जैसे, 'कुछ गुलाब लाल नहीं हैं (कहने से कोई आत्म-व्याघात पैदा नहीं होता चूँकि 'लाल होना' गुलाब के स्वरूप में निहित नहीं है, यानी उसकी परिभाषा नहीं है। भले ही इस कथन को वास्तविक दृष्टि से असत्य कहा जा सकता है। 'राम एक मनुष्य है (तथा 'कौवे काले होते हैं' के संबंध में भी यही बात कही जा सकती है। इसलिए ये सारे कथन संश्लेषात्मक हैं। साधारण रूप से इसीलिए कहा गया है कि जिन कथनों का भी निषेध करने से आत्म-व्याघात पैदा नहीं होता, यानी जो कथन विश्लेषात्मक नहीं हैं, वे संश्लेषात्मक होते हैं।

हम देख सकते हैं कि ऊपर दिये गये विश्लेषात्मक कथनों का निषेध करने से आत्म-व्याघात इसलिए पैदा होता है कि उनमें व्यवहृत शब्द ही ऐसे हैं कि यहि हम उनका निषेध करें तो स्पष्ट रूप में एक आत्म-व्याघात सामने आ जाता है। इसीलिए विश्लेषात्मक कथनों की दूसरी मान्य परिभाषा में यह कहा जाता है कि ये वैसे कथन हैं जिनकी सत्यता का निर्धारण उनमें व्यवहृत शब्दों के अर्थ-विश्लेषण मात्र से हा जाता है (*"An analytic proposition is one whose truth can be determined solely by an anlysis of the meaning of the words in the sentence expressing it."*)[1]। इसके विपरीत संश्लेषात्मक कथन वैसे कथन हैं जिनकी सत्यता का निर्धारण उनके अन्दर व्यवहृत शब्दों के अर्थ के द्वारा नहीं, बल्कि वास्तविक अनुभव के द्वारा होता है। उदाहरण के लिए 'कुछ गुलाब लाल हैं' कथन की सत्यता का निर्धारण तबतक संभव नहीं जबतक वास्तविक अनुभव में हम न देख लें कि कुछ गुलाब लाल होते हैं तथा कुछ गुलाब दूसरे रंगों के भी होते हैं। 'गुलाब' तथा 'लाल' शब्दों के अर्थ में कुछ ऐसी बात नहीं कि उसी से यह निर्धारण हो जाय कि 'कुछ गुलाब लाल हैं' कथन सत्य है या असत्य। लाल होना गुलाब का पारिभाषिक लक्षण नहीं है ताकि 'गुलाब' के अर्थ में ही लाल होने का अर्थ निहित हो। जिस प्रकार 'कुँवारा अविवाहित होता है' कथन में 'कुँवारा' शब्द में ही अविवाहित होने का अर्थ निहित है, उस प्रकार 'गुलाब' शब्द में लाल होने का अर्थ निहित नहीं है। इसीलिए 'कुछ गुलाब लाल हैं' की सत्यता के निर्धारण के लिए अनुभव का सहारा लेना आवश्यक है।

2. आक्षेप

यद्यपि विश्लेषात्मक-संलेषात्मक कथनों का उपर्युक्त भेद आधुनिक दर्शन तथा तर्कशास्त्र में काफी महत्व रखता है, फिर भी कई विचारकों ने कुछ आधारों पर इस भेद को अमान्य तथा बेकार बतलाया है। कुछ लोगों का यह कहना है कि चूँकि एक ही प्रतिज्ञप्ति एक समय में या एक संदर्भ में विश्लेषाात्मक होती है, पर फिर किसी दूसरे समय या संदर्भ में संश्लेषात्मक हो जाती है, इसलिए विश्लेषात्मक-संश्लेषात्मक का यह भेद बहुत निश्चित तथा स्पष्ट नहीं

Scanned by TapScanner

है। और ऐसा नहीं होने से यह भेद बेकार है। उदाहरण के लिए, कुछ समय पहले तक यह ज्ञात नहीं था कि मादा 'ह्वेल अपने बच्चों को दूध पिलाती है और ह्वेल स्तनपायी (mammal) प्राणी है, इसलिए ह्वेल स्तनपायी प्राणी है' कथन को पहले विश्लेषात्मक नहीं माना जाता था, पर अब न सिर्फ इस बात की जानकारी है कि ह्वेल स्तनपायी है, बल्कि इस गुण को ह्वेल के पारिभाषिक लक्षण में जोड़ दिया गया है और इसलिए अब 'ह्वेल स्तनपायी प्राणी है' एक विश्लेषात्मक कथन है। उसी प्रकार 'सर्वश्रेष्ठ खेलाड़ी वह है जो सर्वाधिक प्रतिस्पर्धाओं में विजयी होता है' कथन विश्लेषात्मक है अथवा नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि 'सर्वश्रेष्ठ खेलाड़ी' की परिभाषा इम क्या करते हैं। यदि 'सर्वाधिक प्रतिस्पर्धाओं में विजयी होना' सर्वश्रेष्ठ खेलाड़ी' की परिभाषा हो, तब तो उपर्युक्त कथन विश्लेषात्मक होगा, अन्यथा संश्लेषात्मक। इसलिए भेद बहुत स्पष्ट और निश्चित नहीं है।

इन उदाहरणों के आलोक में हम यहाँ यह कहना चाहेंगे कि यह बात सत्य है कि बहुत उदाहरणों में बिना संदर्भ जाने अथवा वाक्य के किसी महत्वपूर्ण शब्द का बिना पारिभाषिक लक्षण जाने यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि कोई कथन विश्लेषात्मक है अथवा संश्लेषात्मक, पर फिर भी इस कठिनाई के चलते विश्लेषात्मक-संश्लेषात्मक भेद बिलकुल बेकार और महत्त्वहीन नहीं हो जाता। अधिकांश उदाहरण ऐसे हैं जिनमें अपनी उपर्युक्त कसौटियों को लागू करने में हमें कठिनाई नहीं होती, और हम भेद की लेते हैं। जैसे, एक तरफ 'भाई पुरुष होता है' तथा दूसरी तरफ, 'इस कमरे में एक दरवाजा है' कथन में यह भेद करने में कोई कठिनाई नहीं होती कि इनमें कौन विश्लेषात्मक है और कौन संश्लेषात्मक। हाँ, ऐसा लगता है कि इस भेद को सही रूप में अंजाम देने के लिए शब्दों के पारिभाषिक अर्थों का अधिक-से-अधिक ज्ञान हमारे लिए जरूरी है।

कुछ लोगों का फिर यह भी कहना है कि किसी वस्तु का कोई गुण उसकी अवधारणा में ही निहित है या नहीं, यह इस बात का एक महत्वपूर्ण आधार है कि उस वस्तु से संबंधित कथन विश्लेषात्मक है या संश्लेषात्मक। उदाहरण के लिए अविवाहित होना कुँवारे मनुष्य की अवधारणा में ही निहित है और इसलिए 'कुँवारा अविवाहित है' कथन को हम विश्लेषात्मक मानते हैं। पर किसी भी वस्तु की अवधारणा में हमारे अनुभव तथा ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ अनेकों गुण जुटते जाते हैं और इसलिए समय पाकर वस्तु संबंधी सारे गुण उसकी अवधारणा में ही निहित मालूम पड़ते हैं, और इसलिए उससे संबंधित सारे कथन विश्लेषात्मक हो जाएँगे।

पर इस प्रकार का आक्षेप एक गलतफहमी पर आधारित है। यह बात सत्य है कि समय पाकर किसी वस्तु के अनेकों गुणों की जानकारी हमें हो जाती है, पर यह सत्य नहीं है कि उस सारे गुणों को हम उस वस्तु की अवधारणा में जोड़ते जाते हैं। कुछ मौलिक और सारगुणों को ही हम वस्तु की अवधारणा में सम्मिलित करते हैं और उन्हीं के आधार पर वस्तु से संबंधित पद की हम परिभाषा करते हैं। उदाहरण के लिए, समय पाकर हम मनुष्यों के अनेकों गुणों की जानकारी प्राप्त करते जाते हैं, जैसे, वह लम्बा-नाटा होता है, ईमानदार-बेईमान होता है, बुद्धिमान-मूर्ख होता है, आदि। पर इन सभी गुणों को हम उसकी परिभाषा में नहीं जोड़ते। उसकी परिभाषा में तो उसके दो ही मौलिक गुणों 'प्राणित्व' तथा 'विवेकशीलता' का समावेश करते हैं और इन्हीं के आधार पर यह निर्धारित करते हैं कि मनुष्य संबंधी कौन कथन विश्लेषात्मक है और कौन संश्लेशात्मक। जैसे, 'मनुष्य विवेकशील है' कथन को हम विश्लेषात्मक तथा 'मनुष्य ईमानदार है' को संश्लेषात्मक कहते हैं।

Scanned by TapScanner

फसल का प्रतीक्षा नहीं करना पड़ता।

(2) विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति (प्रकथन)

(Analytic and Synthetic proposition)

भूमिका– प्रागनुभविक तथा आनुभविक प्रतिज्ञप्तियों के भेद के साथ आधुनिक तर्कशास्त्र में एक और भेद किया जाता है जिसे विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति कहते हैं। इन दोनों प्रकार के प्रकथनों (प्रतिज्ञप्तियों) के भेदों और समस्याओं को कान्ट के द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषणात्मक प्रकथन के महत्व के विषय में हास्पर्स का यह कहना है कि "विश्लेषी प्रतिज्ञप्तियों का दार्शनिकों के लिए काफी अधिक महत्व है, क्योंकि जब एक बार आप जान लेते हैं कि एक दी हुई प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है, तब आप आगे कोई भी जांच-पड़ताल किए बिना जान लेते हैं कि वह सत्य है –यह जानने के लिए आपको विशेषत: जगत का प्रेक्षण (निरीक्षण) नहीं करना पड़ता, जो कि जिन प्रतिज्ञप्तियों पर हम विश्वास करते हैं उनमें से अधिकतर की सत्यता को जानने से पहले जरूरी होता है।" (वही पृ. 234)

विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति की परिभाषाएँ और भेद – इन प्रतिज्ञप्तियों की परिभाषा कान्ट ने भी दी है,* परन्तु वही परिभाषा आज भी नहीं प्रस्तुत की जाती, क्योंकि आज कान्ट की परिभाषा संकुचित मानी जाती है। इस विषय में हास्पर्स का विचार है कि

Scanned by TapScanner

"सबसे पहले इमेनुअल कान्ट (1724-1804) ने विश्लेषी और संश्लेषी का भेद किया, परन्तु 'विश्लेषी' की उनकी दी हुयी परिभाषा कुछ संकीर्ण थी। कान्ट के अनुसार **विश्लेषी कथन वह है, जिसमें विधेय, उद्देश्य की ही पूरी या अधूरी आवृत्ति होती है।** जैसे 'अ अ है' (पक्षी पक्षी है) में विधेय पूरे उद्देश्य की आवृत्ति है, और 'अ ब अ है' (पक्षी पंख वाले होते हैं) में विधेय, उद्देश्य के एक भाग की आवृत्ति है। ... बाद के दार्शनिकों ने जल्द ही यह बात ताड़ ली कि यदि कान्ट की परिभाषा मान ली जाय तो अनेक ऐसी प्रतिज्ञप्तियाँ विश्लेषी नहीं रहेंगी जो 'विश्लेषी' की हमारी परिभाषा के अनुसार है', क्योंकि वे परम्परागत उद्देश्य-विधेय वाले आकार में नहीं बैठतीं।" (वही 238) हास्पर्स के अनुसार बाद के दार्शनिकों ने कान्ट की विश्लेषी की परिभाषा छोड़ कर अनेक परिभाषाओं में से केवल दो परिभाषाओं का उल्लेख किया है। अतः यहाँ इन्हीं दो परिभाषाओं का उल्लेख आवश्यक है–

(1) पहली परिभाषा है– 'विश्लेषी कथन वह है, जिसका निषेध आत्मविरोधी (self-contradictory–स्वतोव्याघाती) होता है। यदि कोई कहे कि "काला काला नहीं है", तो यह स्वतोव्याघाती बात होगी (An analytic statement is a statement whose negation is self contradictory) (वही पृ. 236) उदाहरणों द्वारा विश्लेषी कथन को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे– 'लाल वस्तु लाल है', या 'त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा होता है' या 'कुवाँरा अविवाहित होते हैं' आदि। ये सभी कथन विश्लेषणात्मक हैं, क्योंकि परिभाषा के अनुसार हम देख सकते हैं कि इन सभी कथनों का निषेध करने पर स्वतोव्याघात (Self-contradiction) उत्पन्न हो जाता है। जैसे यदि हम यह कहें कि 'लाल वस्तु लाल नहीं है' तो यह स्वतोव्याघाती हो जाएगा। इसी तरह यदि हम कहते हैं कि 'त्रिभुज तीन भुजाओं से नहीं घिरा होता है', या 'कुंवारा अविवाहित नहीं होता है', तो यह स्वतोव्याघाती कथन हो जाता है, क्योंकि 'कुँवारा' का अर्थ ही होता है 'अविवाहित'। अतः यह कथन स्वतोव्याघाती है।

संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति की पहली परिभाषा – संश्लेषी प्रतिज्ञप्ति की परिभाषा में कहा जाता है कि "संश्लेषी प्रतिज्ञप्ति वह है जो विश्लेषी न हो। (synthetic propositions are propositions that are not analytic) अर्थात् जिन कथनों का निषेध करने से कोई स्वतोव्याघात उत्पन्न नहीं होता (चाहे असत्य कथन होता हो।) उन्हें संश्लेषी कथन कहते हैं। जैसे – 'बर्फ सफेद है', (सत्य संश्लेषी प्रतिज्ञप्तियों) और 'बर्फ सफेद नहीं हैं।' (निषेधात्मक असत्य संश्लेषी प्रतिज्ञप्ति) इसी प्रकार अन्य उदाहरण जैसे 'कुछ गुलाब लाल हैं', 'मोहन एक मनुष्य है', 'कौवे काले होते हैं', आदि कथन भी संश्लेषी हैं, क्योंकि इनके निषेध से कोई स्वतोव्याघात कथन नहीं उत्पन्न होता। यदि हम कहते हैं कि 'कुछ गुलाब लाल नहीं हैं', तो इस निषेध से स्वतोव्याघात उत्पन्न नहीं होता, चाहे इसे असत्य भले कह लें। इसी तरह उपर्युक्त अन्य कथनों के विषय में कहा जा सकता है।

(cont from page 32)

... Kant (in the field of mathematics and logic,

(2) – विश्लेषी कथन की दूसरी परिभाषा – हास्पर्स ने विश्लेषी कथन की एक दूसरी परिभाषा इस प्रकार दी है – 'विश्लेषी प्रतिज्ञप्ति वह है, जिसकी सत्यता का निर्धारण केवल उसको व्यक्त करने वाले वाक्य में आने वाले शब्दों के अर्थ के विश्लेषण से हो सकता है।" (An analytic proposition is one whose truth can be determined solely by an analysis of the meaning of the words in the sentence expressing it) (वही पृ. 237) इस परिभाषा की व्याख्या करते हुए हास्पर्स ने बताया है कि "यह जानने के लिए कि प्रतिज्ञप्ति सत्य है या नहीं, आपको भाषा के अलावा दुनिया में किसी चीज़ की जाँच-पड़ताल करने की जरूरत नहीं है। यदि आप "पिता" (पुरुष जनक) के अर्थों का विश्लेषण करें, तो आप जान लेते हैं कि "पिता पुरुष होता है", सत्य है, आपको यह जानकारी स्वयं वाक्य के विश्लेषण से हो जाती है, दुनिया के तथ्यों के प्रेक्षण (निरीक्षण) से नहीं। इस प्रतिज्ञप्ति की सत्यता को निर्धारित करने के लिए आपको सिर्फ इस वाक्य के शब्दों का ही अर्थ जानना है।"[1] इसी तरह एक दूसरा उदाहरण 'कुँवारा अविवाहित होता है' लिया जा सकता है। इस कथन की सत्यता की जानकारी के लिए किसी वास्तविक तथ्य का अनुभव करना आवश्यक नहीं है। इसकी सत्यता का पता 'कुँवारा' और 'अविवाहित' शब्दों के अर्थ से चल जाता है। 'कुँवारा' से 'अविवाहित' होने का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

संश्लेषी प्रतिज्ञप्ति की दूसरी परिभाषा – संश्लेषी प्रकथन की दूसरी परिभाषा इस प्रकार भी की जा सकती है– "ऐसे कथन जिसकी सत्यता का निश्चय उनमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर नहीं वरन् वास्तविक अनुभव के आधार पर होता है।" उदाहरण के लिए 'कुछ कुत्ते सफेद हैं' इस कथन की सत्यता का ज्ञान तब तक नहीं होगा जब तक कि सफेद कुत्ते को देख न लिया जाय। सफेद कुत्ते का अनुभव में आना आवाश्यक है। इस कथन की सत्यता यदि चाहें कि 'कुत्ते' और 'सफेद' शब्द के आधार पर निर्धारित करें तो यह संभव नहीं है। परन्तु 'कुँवारा अविवाहित होता है' इस कथन की सत्यता का पता लगाने के लिए अनुभव की आवश्यकता नहीं है। इसमें प्रयुक्त शब्द 'कुँवारा' और 'अविवाहित' के अर्थ से ही पता चल जाता है कि यह प्रतिज्ञप्ति अनिवार्यतः सत्य है – अर्थात् 'कुँवारा' का अर्थ ही 'अविवाहित' होना है।

इन दोनों प्रकार की परिभाषाओं के सम्बन्ध में हास्पर्स का दृष्टिकोण यह है कि "पहली परिभाषा स्वयं प्रतिज्ञप्तियों की एक विशेषता को बताती है, और दूसरी परिभाषा यह बताती है कि हमें उनके सत्य होने की जानकारी कैसे होती है। परन्तु अधिकतर प्रयोजनों के लिए दोनों 'परिभाषाओं' में कोई अन्तर नहीं है"। (वही पृ. 237)

हास्पर्स के अनुसार विश्लेषी प्रतिज्ञप्ति की अस्पष्टता

(1) एक प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है या नहीं, इसका ज्ञान प्रतिज्ञप्ति से ही हो जाता है, जैसे– 'काला काला है।' यह प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है, बिल्कुल स्पष्ट है। परन्तु हास्पर्स के अनुसार कुछ प्रतिज्ञप्तियों का विश्लेषी होना बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता। उदाहरण के लिए 'सब भाई भाई हैं', स्पष्ट रूप से विश्लेषी है, परन्तु 'सब भाई पुरुष हैं' स्पष्ट रूप से विश्लेषी बिल्कुल नहीं है। इसे विश्लेषी बनाने के लिए हमें 'भाई' की परिभाषा बतानी पड़ेगी और उस परिभाषा को इस शब्द के स्थान पर रखना पड़ेगा। इसी प्रकार एक दूसरा उदाहरण इस प्रकार है– "एक गज तीन फुट होता है" यह विश्लेषी प्रकथन नहीं है। यह विश्लेषी तब होता, जब

Scanned by TapScanner

"गज" के स्थान पर उसकी (गज की) परिभाषा "तीन फुट", को रखकर "तीन फुट तीन फुट है", वाक्य प्राप्त करते हैं। यह वाक्य (तीन फुट, तीन फुट है) विश्लेषी वाक्य (प्रकथन) होता है।

(2) दूसरी स्थिति में भी कुछ प्रकथन विश्लेषी नहीं ज्ञात होते। "यदि परिभाषाएँ स्पष्ट नहीं होतीं तो यह भी स्पष्ट नहीं होता कि प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है या नहीं।" जैसे 'कुमार अविवाहित होते हैं', सरल और स्पष्ट है, क्योंकि अविवाहित होना, कुमार होने की एक परिभाषक विशेषता है। इसी तरह "सब भौतिक द्रव्य स्थान घेरते हैं', सरल और स्पष्ट है तथा परिचित भी, क्योंकि "स्थान घेरना भौतिक द्रव्य की एक परिभाषक विशेषता है।" परन्तु कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं, जो सरल और स्पष्ट नहीं हैं। जैसे "उत्तम खिलाड़ी वे हैं, जो अधिकतर खेलों में जीतते हैं।" इसमें 'उत्तम खिलाड़ी' की परिभाषा पर निर्भर करता है कि यह प्रकथन विश्लेषी है या नहीं। यदि 'उत्तम खिलाड़ी' का अर्थ यह है कि जो सबसे अधिक विजय का रिकार्ड बनाए तब तो यह कथन विश्लेषी है, परन्तु यदि वह अधिक कुशलता से खेलने के अर्थ में उत्तम खिलाड़ी है तो यह विश्लेषी नहीं है। सारांश यह है कि "प्रतिज्ञप्ति का विश्लेषी होना या न होना उसमें शामिल पदों की परिभाषाओं पर निर्भर करता है। यदि परिभाषाएँ स्पष्ट नहीं हैं तो – "यह भी स्पष्ट नहीं होता कि प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है या नहीं।" [1]

(3) **"हमें सदैव वाक्य के रूप को देखकर भी नहीं चलना चाहिए"** – कभी-कभी वाक्य के रूप को देख कर यह समझ लेते हैं कि वाक्य विश्लेषी है परन्तु वह वैसा होता नहीं। जैसे – "काले आदमी काले आदमी हैं", विश्लेषी लगता है, पर वास्तव में ऐसा है नहीं। कारण यह है कि जिन लोगों को "काले आदमी" कहा जाता है (जैसा कि यूरोपियों के द्वारा कहा जाता है) "उनकी यह परिभाषक विशेषता नहीं है कि वे अवश्य ही काले हों: एक कश्मीरी भी "काला आदमी" है, हलाँकि वह वर्ण में एक यूरोपीय से भी गोरा हो सकता है। अधिकतर "काले लोग" अधिकतर यूरोपियों की तुलना में काले होते हैं, इसीलिए यह नाम चल पड़ा है, परन्तु इससे हमें यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि जिस विशेषता के आधार पर किसी समूह का नाम पड़ता है वह सदैव एक परिभाषक विशेषता होती है।"[2] इसी प्रकार हास्पर्स ने एक दूसरा उदाहरण भी प्रस्तुत करके बतलाया है कि देखने में वह भी विश्लेषी लगता है, परन्तु वह विश्लेषी नहीं है। उदाहरण के लिए "व्यापार व्यापार है" अर्थात् "अ अ है" की भाँति दिखायी देता है। परन्तु प्रयोग में इसका अर्थ होता है– "व्यापार में सब चलता है।" स्पष्ट है कि इस वाक्य में व्यक्त की गयी प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी नहीं है। इन उपर्युक्त प्रकथनों के विपरीत उदाहरण देते हुए हास्पर्स ने बताया है कि देखने में तो यह प्रकथन विश्लेषी नहीं है, परन्तु यदि उसके सही अर्थ में देखा जाय तो वह विश्लेषी है। जैसे– "यदि तुम इस अध्याय को काफी देर तक पढ़ोगे तो यह तुम्हारी समझ में आ जाएगा।" इस कथन की व्याख्या हास्पर्स ने इस प्रकार की है– "कितनी देर काफी देर हैं?" मान लीजिए कि तुम इस अध्याय को पचास बार पढ़ते हो और फिर भी तुम्हारी समझ में नहीं आया। तब कोई कहता है, "इससे केवल यह प्रकट होता है कि तुमने यह काफी देर तक नहीं पढ़ा।" अब हमें यह शक होने लगता है कि वह "काफी देर तक" का "जब तक यह आपकी समझ में नहीं आ जाता" के अर्थ में प्रयोग कर रहा है। और यदि यह

Scanned by TapScanner

इसका अर्थ है तो यह विश्लेषी है– (यदि तुम इसे तब तक पढ़ते रहोगे जब तक यह तुम्हारी समझ में नहीं आ जाता, तो इसे समझ जाओगे।''[1]

विश्लेषी प्रतिज्ञप्तियों को पहचानने में सावधानियाँ (Precautions)

(1) भिन्न अर्थ वाली प्रतिज्ञप्ति – हास्पर्स के अनुसार कोई प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है या नहीं, इसके पहचान के लिए आवश्यक है कि इस बात का ध्यान रखा जाय कि यदि कोई वाक्य बिना अर्थ वाला हो तो उसके अर्थ के अनुसार देखना होगा कि वह विश्लेषी है या नहीं। जैसे – ''सभी मधुशालाओं में शराब पिलाई जाती है'', यह प्रतिज्ञप्ति तब विश्लेषी होगी जब 'मधुशाला' का अर्थ वह स्थान हो जहाँ शराब बिकती है, परन्तु 'मधुशाला' का अर्थ यदि वह स्थान है जहाँ शहद मिलता है, तो यह प्रकथन विश्लेषी नहीं है। वास्तव में 'ये दोनों कथन भिन्न-भिन्न वाले अर्थ के हैं।'

(2) शब्दों का अलग-अलग ढंग से प्रयोग – कभी-कभी अलग-अलग लोग शब्दों का अलग-अलग ढंग से प्रयोग करते हैं, ऐसी स्थिति में एक व्यक्ति द्वारा बोला गया वाक्य विश्लेषी कथन को व्यक्त कर सकता है, जबकि दूसरे व्यक्ति द्वारा बोला गया वाक्य विश्लेषी नहीं होता। हास्पर्स ने इसे निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट किया है – ''यदि आप नीचे किसी टेक के होने को (जैसे टाँगों का होना) 'मेज' की परिभाषा का अंग मानते हैं तो, ''मेज नीचे किसी चीज पर टिकी हुयी है'' आपके प्रयोग के अनुसार विश्लेषी है। परन्तु यदि एक दूसरा व्यक्ति ''मेज'' शब्द का प्रयोग भिन्न रूप से करता है– जैसे, यदि छत से एक तार से लटकते हुए मेज के ऊपरी तख्ते को वह मेज मान लेता है– तो वह प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी नहीं है।''[2] कथन विश्लेषी है या नहीं इसकी निश्चितता के लिए हास्पर्स के अनुसार यह आवश्यक है कि हम वाक्य का प्रयोग करने वाले व्यक्ति से उसके द्वारा प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा पूछें। यही परिभाषा ही सही निर्धारण कर सकती है कि कथन विश्लेषी है या नहीं। जैसे मेज में उसकी टाँगों का होना उसकी परिभाषा में सम्मिलित है। अतः वह विश्लेषी है।

(3) कोई प्रतिज्ञप्ति एक समय में विश्लेषी हो सकता है, परन्तु दूसरे समय में नहीं – हास्पर्स ने एक और विशेष बात पर ध्यान देने के लिए आग्रह किया है। उनके अनुसार ''ऐसा हो सकता है कि कोई प्रतिज्ञप्ति एक समय विश्लेषी हो सकती है और दूसरे समय न हो।''– अर्थात् यह हो सकता है कि एक बार जिस वाक्य का प्रयोग एक विश्लेषी प्रतिज्ञप्ति को प्रकट करने के लिए किया जाता है, दूसरे समय शायद वह विश्लेषी प्रतिज्ञप्ति को प्रकट न करे। हास्पर्स के अनुसार जो प्रतिज्ञप्ति विश्लेषी है, वह सदा ही विश्लेषी रहेगी, परन्तु ऐसा भी हो सकता है कि बाद में उस वाक्य का, एक भिन्न प्रतिज्ञप्ति को प्रकट करने के लिए प्रयोग किया गया हो। उदाहरण के लिए ''ह्वेल स्तनपायी है।'' यह वाक्य पहले विश्लेषी प्रतिज्ञप्ति के रूप में नहीं होता था, परन्तु चूँकि अब ह्वेलों के स्तनपायी होने की विशेषता को ''ह्वेल'' की परिभाषा में मिला लिया गया है, इसलिए इस समय ''ह्वेल स्तनपायी है'' विश्लेषी है।

Scanned by TapScanner